बिस्मिल्लाह-हिर-रहमानिर-रहीम

शैतान और उसका लालच

इंजील : मत्ता 4:1-11

तब रूहुल-कुदुस ईसा(अ.स) को रेगिस्तान में ले कर गई ताकि शैतान उनको बहका सके।[1] ईसा(अ.स) ने चालीस दिन और चालीस रात तक खाना नहीं खाया था और उसके बाद उनको बहुत भूख लगी थी।[2] शैतान उनके पास आया ताकि उनको बहका सके। शैतान ने कहा, “अगर तुम अल्लाह के चुने हुए नुमाइंदे हो *[मसीहा हो]*, तो इन पत्थरों से कहो कि रोटी बन जाएं।”[3] ईसा(अ.स) ने जवाब दिया, “किताब-ए-मुक़द्दस में लिखा है, इंसान सिर्फ़ खाने से ज़िंदा नहीं, बल्कि इंसान अल्लाह ताअला के कलाम से ज़िंदा है।”[a][4]

तब शैतान उनके साथ येरूशलम के पाक शहर पहुंचा। शैतान ने उनको एक इबादत ख़ाने की ऊँची जगह पर बहकाने की कोशिश करी।[5] शैतान ने कहा, “अगर तुम मसीहा हो तो नीचे कूद जाओ क्यूँकि ये मुक़द्दस किताब *[ज़बूर शरीफ़]* में लिखा है, ‘उसने तुम्हारी हिफ़ाज़त की ज़िम्मेदारी फ़रिश्तों को दी है। इससे पहले तुम्हारा पैर पत्थर पर टकराए, वो तुमको अपने हाथों से पकड़ लेंगे।’”[b][6]

ईसा(अ.स) ने जवाब दिया, “किताब-ए-मुक़द्दस में ये भी लिखा है कि अल्लाह ताअला का इम्तिहान मत लो।”[c][7]

फिर शैतान उनके साथ एक बहुत ऊँचे पहाड़ पर पहुंचा। उसने उनको दुनिया की सल्तनतों का लालच देने की कोशिश करी।[8] तब शैतान ने उनसे कहा, “अगर तुम मेरी ताज़ीम में अपना सर झुका दोगे तो मैं तुमको ये सारी चीज़ें दे दूँगा।”[9]

ईसा(अ.स) ने शैतान को जवाब दिया, “मेरे पास से चले जाओ, ए शैतान! किताब-ए-मुक़द्दस में ये लिखा है, ‘तुम सिर्फ़ अल्लाह ताअला की इबादत और उसकी ही ख़िदमत करो!’”[d][10]

तब शैतान ईसा(अ.स) को छोड़ कर भाग गया और फिर फ़रिश्ते ईसा(अ.स) की ख़िदमत करने पहुंच गए।[11]

---

[a] तौरैत : इआदा 8:3

[b] ज़बूर 91:11-12

[c] तौरैत : इआदा 6:16

[d] तौरैत : इआदा 6:13